श्री योगेश्वरी शिक्षण संस्था

शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

हिंदी विभाग, स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई

तथा

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

2016-2017

लोकसाहित्य

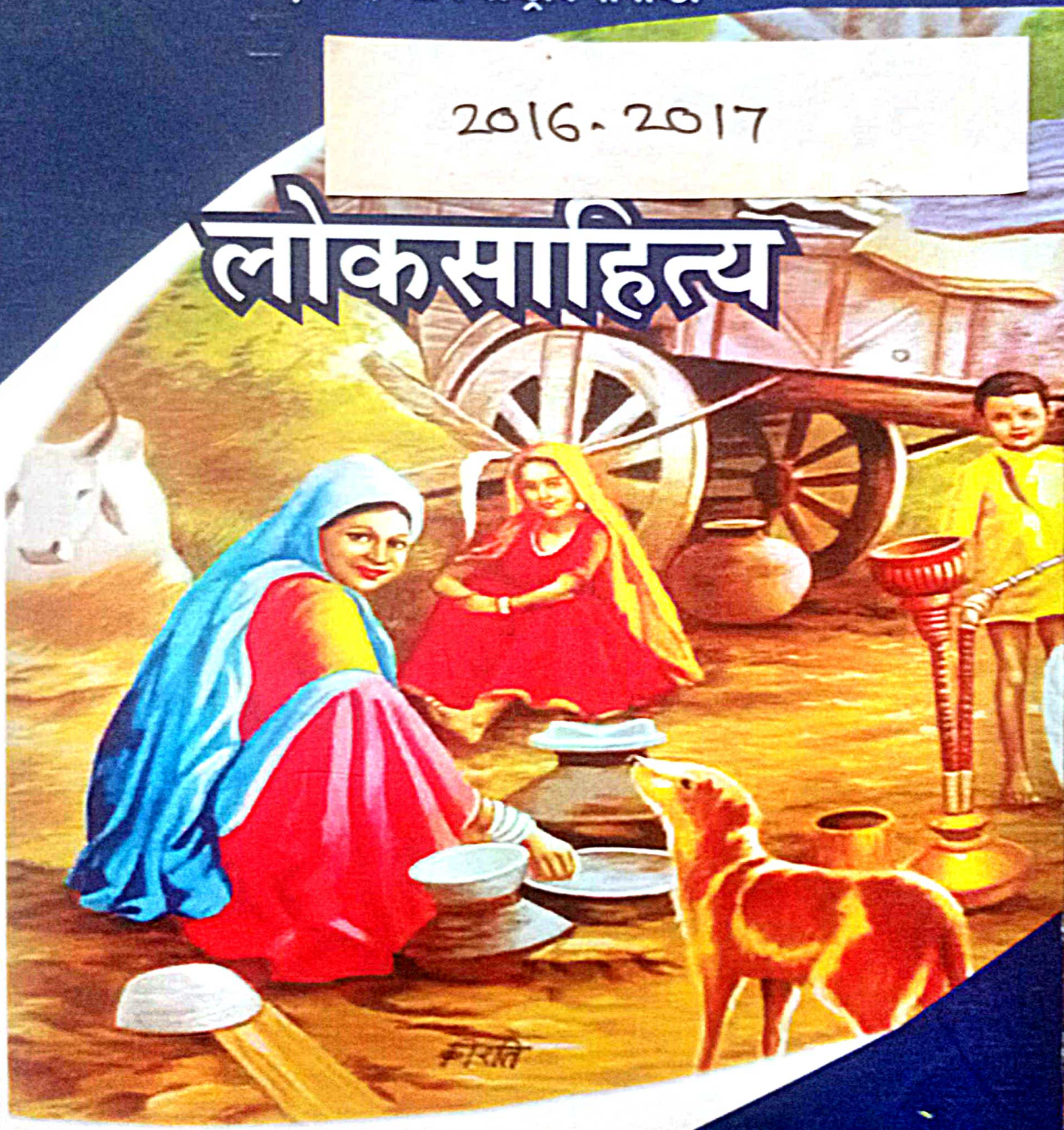

संपादक

डॉ. गणपत राठोड

सह संपादक

डॉ. राम बडे

ISBN 978-93-83672-48-6

- लोकसाहित्य
- संपादक :- डॉ. गणपत राठोड

  सहसंपादक :- डॉ. राम बडे

  मार्गदर्शक :- डॉ. सुरेश खुरसाले

  प्राचार्य डॉ. प्रविण भोसले

© प्राचार्य

स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई ,जि. बीड

- प्रकाशक

  शौर्य पब्लिकेशन

  कपिल नगर, लातूर, जि. लातूर- 413531.

  मो.नं. 8149668999, 8483959442

- शब्द सज्जा

  श्री. गोदाम अरुण

  8149668999, 8483959442

- मुखपृष्ठ

  श्री. गोदाम अरुण

  8149668999, 8483959442

- मुद्रक

  आर.आर. प्रिंटर्स , एम.आय.डी.सी. लातूर - 413512

- प्रथम संस्करण

  मार्च 2017

- मुल्य - 250 /-

अनुक्रमणिका

खंड 'अ' - लोकसाहित्य

1	लोक साहित्य और समाज : दशा और दिशाएँ	डॉ.भालेराव व्ही.के.	
2	लोकसाहित्य : संकल्पना एवं स्वरूप	डॉ. कॅप्ट. बाबासाहेब माने	1
3	लोकसाहित्य और समाज	प्रा. डॉ. हाके महावीर रामजी	1
4	लोक-साहित्य : अवधारणा एवं महत्त्व	कुलकर्णी कृष्णकुमार बालासाहेब	2
5	लोकसाहित्य : अवधारणा और स्वरूप	प्रा. डॉ. गाडे ज्ञानेश्वर गंगाधरराव	2
6	लोकसाहित्य का महत्व	डॉ. प्रमोद पडवळ	3
7	लोकसाहित्य और समाज : दशा और दिशाएँ	डॉ.मालती डी.शिंदे (चव्हाण)	3
8	मैत्रेयी पुष्पा कृत 'अल्मा कबूतरी ' : में लोक जीवन का यथार्थ चित्रण	साळवे सतीश मधुकर	40 43
9	"लोकसाहित्य की अवधारणा एवं महत्त्व"	प्रा.डॉ.ए.जे.बेवले	47
10	गोंड जनजाति का लोकसाहित्य और जीवन	गिऱ्हे दिलीप लक्ष्मण	52
11	लोक-साहित्य का महत्व	लोहकरे किशोर बळीराम	55
12	भोजपुरी लोकसाहित्य और नारी	डॉ.शिवाजी वडचकर	58
13	भारतीय लोक साहित्य और वर्तमान परिदृश्य	डॉ. बी. आर.नले	63
14	लोक साहित्य का बदलता परिदृश्य	डॉ. शाम सानप	67
15	लोकसाहित्य का महत्व और विशेषताएँ	डॉ.बळीराम भुक्तरे	70
16	लोकसाहित्य और समाज	शेख जावेद रहेमान	74
17	लोक साहित्य का महत्व	साकोळे दत्ता शिवराव	76
18	लोक साहित्य एक सांस्कृतिक अध्ययन	प्रा. राम दगडू खलंग्रे	80
19	लोकसाहित्य की अवधारणा	प्रा.श्रीमंडळे वैशाली शिवाजीराव	85
20	लोकसाहित्य का स्वरूप	डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	87
21	लोकसाहित्य की अवधारणा	गुरुदिपीकौर गुरुमेलसिंग गुंडू	91
22	लोकसाहित्य की अवधारणा	प्रा. श्री खरटमोल मेघराज	94
23	लोकसाहित्य की अवधारणा	वडवराव विजय नागनाथ	98
24	"भारतीय संस्कृति का सफल वाहक है लोक साहित्य"	रमेश बबनराव तिडके	102
25	लोक साहित्य की अवधारणा	बिरादार राजकुमार अर्जुनराव	105
26	लोकसाहित्य का महत्व	डॉ. प्रमोद पडवळ	108
27	लोकसाहित्य और समाज	गीता मनोहरराव नागरगोजे	112

Dist. Parbhani

भोजपुरी लोकसाहित्य और नारी

डॉ.शिवाजी वडचकर

हमारा देश विभिन्न धर्म -समुदायों ,भाषा -बोली ,प्राकृतिक रचनाओं का अद्भुत संगम है और अनेकताओं में एकता को समाहित किए है| आज हमारा देश प्रत्येक क्षेत्र में विकास कर रहा है | संसार के साथ कदम मिलाकर चलने का प्रयास कर रहा है| शिक्षा-रहन-सहन-व्यवहार, आवागमन के साधनों में प्रगती हुई है,किंतु आदिवासी जगजीवन में आज भी अत्यंत विषमताएँ है, जिनको अनदेख नही किया जा सकता | भारतीय समाज में कतिपय विशेष आख्यानों एवं अवसरों को छोडकर सामान्यत: नारी उपेक्षा की ही पात्र रही है | नारी का विषय आते हि हम अपने शास्त्र एवं धर्म ग्रंथो की प्रय: दुहाई देकर यह प्रदर्शित करना चाहते है कि नारी को वैदिक काल सेही समान जनक स्थान प्राप्त है इस परिप्रेक्ष्य में हम बडे गर्व से "यत्र नार्यस्तु रमन्ते तत्र देवता:" की सुक्ती को उध्दरित कर नारी के प्रति अपने सम्मान को पुष्ट करने का प्रयास करते है | ऐसी उक्तियॉ तो हर प्रकार के साहित्य में मिलती है किंतु हमे इन्हे अपवाद स्वरूप ही स्वीकार करने की आवश्यकता है,क्योंकी लोक-व्यवहार एवं परिवारीक में नारी सदैव उपेक्षा की शिकार होती रही है | नारी का सत्य एवं शाश्वत चित्रण कविवर मैथिली शरण गुप्त ने किया है | 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ,ऑचल में है दुध और ऑखो में पानी | 'सत्य तो यही है कि नारी को हमारे समाजने सदैव दु:खही दिया है | संभवत: ब्रम्हाने उसके भाग्य में कोई मुख्यता: प्रत्येक समाज में नारी संघर्ष,तिकीक्षा एवं उपहास की जीती-जागती मिसाल रही है | यहॅ तक की पुरुषोत्तम राम ने भी सीता जैसी पवित्र एवं लक्ष्मी स्वरुपा अपनी पत्नी को अत्यंत क्षुद्र एवं अविश्वसनीय बहाने लेकर उन्हें उनकी गर्भावस्था की दशा के होते हुए वनवास दे दिया | राम जैसे आदर्श शासन तथा महापुरुषों के संरक्षण में नारी यह दशा कितनी लज्जाजनक लगती है | इस आशय का एक बडा कारुणिक गीत भोजपुरी लोकसाहित्य में मिलता है |

"धोबिया बचनिया सुनि राम दुख पवले
ताहि लगि बनबा मोहि भेजलनि हो राम |
अजस मोटरिया देवरु,हमरी लिलरवा
परभु सुजवसा सब होइहें हो राम ||"

नारी अपेक्षा -उपेक्षा एवं अपमान के लिए सिर्फ पुरूष जिम्मेदार है ऐसी बात नही आज भी दहेज

री,सास,ननद,जेठानी,देवरानी,के रुप में होती है | नारी की यह प्रवृति वरन युगों से चली है | स्त्री का चित्रण पुत्री,पुत्रवधु पत्नी एवं भाभी के रुप में किय गया है | जैसा की पहले जा चुका है,स्त्री के भाग्य में दुखों का हि अंबर रहा है | हमारा समाज वैदिकाल से हि धान रहा है और ऐसी प्रतीत होता है कि समाज ने इसके संतुलन हेतु स्त्री-पुरुष के स्वीकार नही किया | कन्या जन्म के अवसर पर किसी असमंजस की स्थिती का वर्णन वहस्थिती विशेष रुपसे माता के पश्चाताप का कारण बनती है| लोककवि ऐसे गीतों मे विरोधाभास न कर समाज के समक्ष प्रश्न करता है कि क्या पुत्री को जन्म देकर माँ किसी महान अपराधसे ग्रसित है,जिसे लेकर आज न जाने कितने दु:खद प्रसंगो और अनुभूतियों से उसे गुजरना पड रहा है ?

" जहि दिन बेटी हो तोहरो जन्म भइले
भइली भदउँआ के रि हो राति
सासु ननद घर दियनों ना बारेली
सेहो प्राभु मुखसे ना बोल |
जहि दिन बेटी हो तोहरो बिआह भइले
भइली जोन्हइआ केरि हो राति |
भइली सोनइया केरि हो राति,
ससु ननद घरे मंगल गावेसी,
हो प्रभु देले कन्या दान ||"

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

उपरोक्त गीत में कन्या के जन्म के दिन भादों की अँधेरी रात का होना,घर में दीपक न जलाया जाना,पति का पत्नी से विमुख होकर माँ-बहानों को साथ देना अभिशाप तुल्य जान पडता है | और विवाह के दिन चाँदनी की सुख देनेवाली रात होना,दीपों सजी जगमगाती सुनहली रात होना,सास ननदों का मंगल गायन करना और पति क प्रसन्न भावसे स्थिति उत्पन्न करनेवाला है ? कदापि नही है | यह लोककवि सुझ-बुझ या दुरदृष्टि है | कवि समाज के समक्ष यह प्रश्न रखना चाहता है कि वर और कन्या के विवाहोत्सव पर जब दोनों ही घरों में मंगलगीत गाए जानें की परंपर है,तो दोनों के जन्म के अवसर पर यह अंतर क्या अनुचित नही है? वही कन्या वधु रुप में वर के गृह मे प्रविष्ट होकर पत्नी और माँ का गौरव प्राप्त करती है | भला एसी परिपुर्ण शोभणीय स्थिति क्या कन्या बोझ सदृश होने का संकेत देती है ?

भारतीय संस्कृती का अत्यंत पुनीत कर्तव्य कन्या को परिणय सत्र में बाँधकर एक अन्य घर को बसाना और दुसरे सुत्र में बँध जाने की अनुठी परंपरा उसे महिमा पंडित कर 'सत्यं शिवं सुंदरम'

का उदाहरण प्रस्तुत करती है | पुत्री के विवाह की समस्या आदि काल से हि है और इसका आयाम आज भी विभिन्न कारणों से बढता ही जारहा है | लडकिया हमेशा से योग्य वर एवं सुख-संपन्न घर की कामना करती आ रही है | विवाह के पश्चात पुत्री की विदाई एवं परिवार से उनका विरह मार्मिक वेदना का एक सेतु होता है | विदाई के संताप के घर -बाहर----------

"माता-पिता ,पशु-पक्षी सभी मर्माहत हो जाते है |

"डोलिया से चलल्‌ ए बेटी आँखी के रे पुतरिया |
चारुओरिया तकले ए बेटी लडके ले रे अन्हरिया |
सून लागे अँगना चननवॉ के गछिया |
भोर -भोर गइया पियावे नाहीं बछिया |
बबुजी के लोरे झोरे भींजली गमछिया |
तडपेले मन जैसे जल के मछरिया |
डोलिया से चललु ऐ बेटी ऑखि केरे पुतरिया |"

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

यह तो जग कही रीति है | जब पुत्री के घर में वधु बनकर जाती है तो उसको सजाने-सॅवारने एवं उसकी समृदधी के लिए वह संपुर्ण रुप में समर्पित होती है | रही दुसरी बात जब वह ससुराल जाती है तो उसके पूर्व पुत्री की मॉ बडे प्यार से घर ग्रहस्थी चलाने के लिए नाना प्रकार से उसे प्रशिक्षित करती है, ताकी नए घर में पुत्री को अन्य कारणों से कोई असुविधा न हो | ससुराल में मायकेवालो को गाली भी मिलेगी तो उसे स्वीकार करनाही पडता है | पुत्री की मॉ इस प्रकार का पर्वानुमान लगा लेती है | तभी वह अपनी पुत्री को समाझा- बुझाकर ससुराल भेजती है, तब कहती है मॉ,बाप,भाई,बहन के प्रति कोई अपशब्द या दुर्व्यवहार भी मिले तो उसे सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए,क्योंकि अनी सहनशीलता,विनम्र व्यवहार एवं शांत स्वभाव संही वह ससुरालवालों का ह्रदय जीत सकती है |

विवाह के पश्चात कन्या जब बहु बनकरी ससुराल में प्रवेश करती है तो उसको प्रताडना सास,ननद,आदी सभी करने लगते है | बहु के लिए शारीरिक यातनाएँ देना भी आज आम बात हो गई है और अब तो दहेतकी कमी या बहु के किसी दुर्गुण के कारण उसके जलाने या हत्या की घटना भी प्रायः रोज सुनने को मिलती है | यह आश्चर्य की बात है कि ये उपरोक्त सभी नारियॉ सबसे पहले नारियॉ सबसे पहले नारीयॉ ही तो है | अपनी यह पुर्व परिस्थितियों को भुलकर नववधु के साथ अमानवीय व्यवहार करने लगती है | जब बहु का भाई उससे मिलने आता है तो वह चाहती है कि अपने सारे दर्द भाई से कहकर अपना मन हलका करें | इसी आशय का लम्बा गीत है- ऐ भाई,अपने दुःखों की गठरी मैं बाँध चुकी हूँ और जब इसको खोलने

का अवसर मिलेगा तो रोने के अतिरिक्त अन्य कोई पर्याय नही करा जाता -'ई दु:ख बाँधे भइया अपनी गठरिया,जहवा खोलहु तह रोहहु |' एक और कारुणिक गीत इस संदर्भ में प्रस्तुत है,जिसमें परिवार के कठोर निर्दयी एवं अमानुष सदस्यों के प्रति नव-वधु के प्रति के विचार व्यक्त किए गए है|

"सासु तौ ए भइया बुढिया डोकरिया
आजु मरै की काल्ही,
ननदी तौ ए भइया बनकी कोइलिया,
आजु उडै की काल्ही ,
जेठनियॉ तौ ए भइया काली बदरिया,
छिल निकरे छिन धाम"
देवरानियॉ तौ भइया कोने की बिलरिया
छिन निकरें छिन भाग |'

late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

नारी एवं कन्या के विभिन्न सामाजिक परिवारिक एवं आत्मीय संबंधो की एक झलक भोजपुरी लोकगीतो में अवलोकन करने के पश्चात महिला वर्ग की आसदी का जो स्वरुप भोजपुरी लोकोक्तीयो मे उपलब्ध है उनपर भी दृष्टिपात करना नितात प्रसंगिक है | लोकोक्तिया ही लोकव्यवहार की वास्तविक प्रतिमान होती है और उनमें व्यक्त विचार लोकव्यवहार में प्राचीन काल से न केवल स्वीकार किए गए है, वरन उन्हे प्रमाण स्वरुप उध्दरित किए जाने कह परंपराएँ भी बडी गहन है | पुञी के जन्म के समय माता-पिता को जो मानसीक संञास मिलता है उसे झेल लेने के पश्चात पुञी जब बडी होती तो उसके विवाह की चिंता माता-पिता को सताना प्रारंभ कर देती है | जिसमें पिता चारों दिशा में पुञी के लिए वर की तलाश करता है | परंतु उसके योग्य जब कहीं वर नही मिलता तो निराश होकर वह बेटी से कह देता है कि अब तुम कुँवारी ही रहा|

"पुरुब हेरेउँ पछुआ में हरेउँ
हेरेउँ दिल्ली,गुजरात |
तुमहि जोग वर कातहूँ न पावा,
अब बेटी रहउँ कुँवारी |"

पिता कि चिंता को उजागर करनेवाला एक गीत है तो पिता को रात -रात भर नही आती

'कि जागे बिटियॉ के बाप,कि जागे जेकिके घर सॉप |'
'वही के पिता कइ नींद कइसे लागई,

जेहि घर कन्या कुऑर |

पुत्री के विवाह की गंभीर समस्या के परिप्रेक्ष्य में उसकी मृत्यु पर भरी परिवार को एक प्रकार की खुशी मिलती है,क्योंकि लोंको की यह भावना है की बेटी के जिवित रहने पर वह आजन्म दु:ख का कारण होती है |

"पर हथ बनिज सँदेसे खेती,
बिन घर देखे,ब्याहे बेटी |
व्दार पराए गाडे थाती,
ये चारिउ मिलि पीटै छाती ||"

बिना घर देखे बेटी का ब्याह पश्चाताप एवं जासदी बन सकता है | पुत्री के लिए माता-पिता को पुत्रसे अलग प्रकार का लालन-पालन एवं शिक्षा दिक्षा देनी पडती है |क्योकी वह दुसरे घर जाकर पुत्री के स्वभाव ,उसके बात-व्यवहार उसके चरित्र एवं उसकी शांत प्रकृति आदि के प्रतित माता-पिता को बडा सावधान रहना पडता है | तभी वह एक आदर्श पुवधु एवं गृहिणी के रुपमें प्रतिष्ठित हो सकती है| इन प्रसंगो से संदर्भित लोकक्तियॉ अत्यंत महत्वपुर्ण तथा मार्गदर्शक लगती है |

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

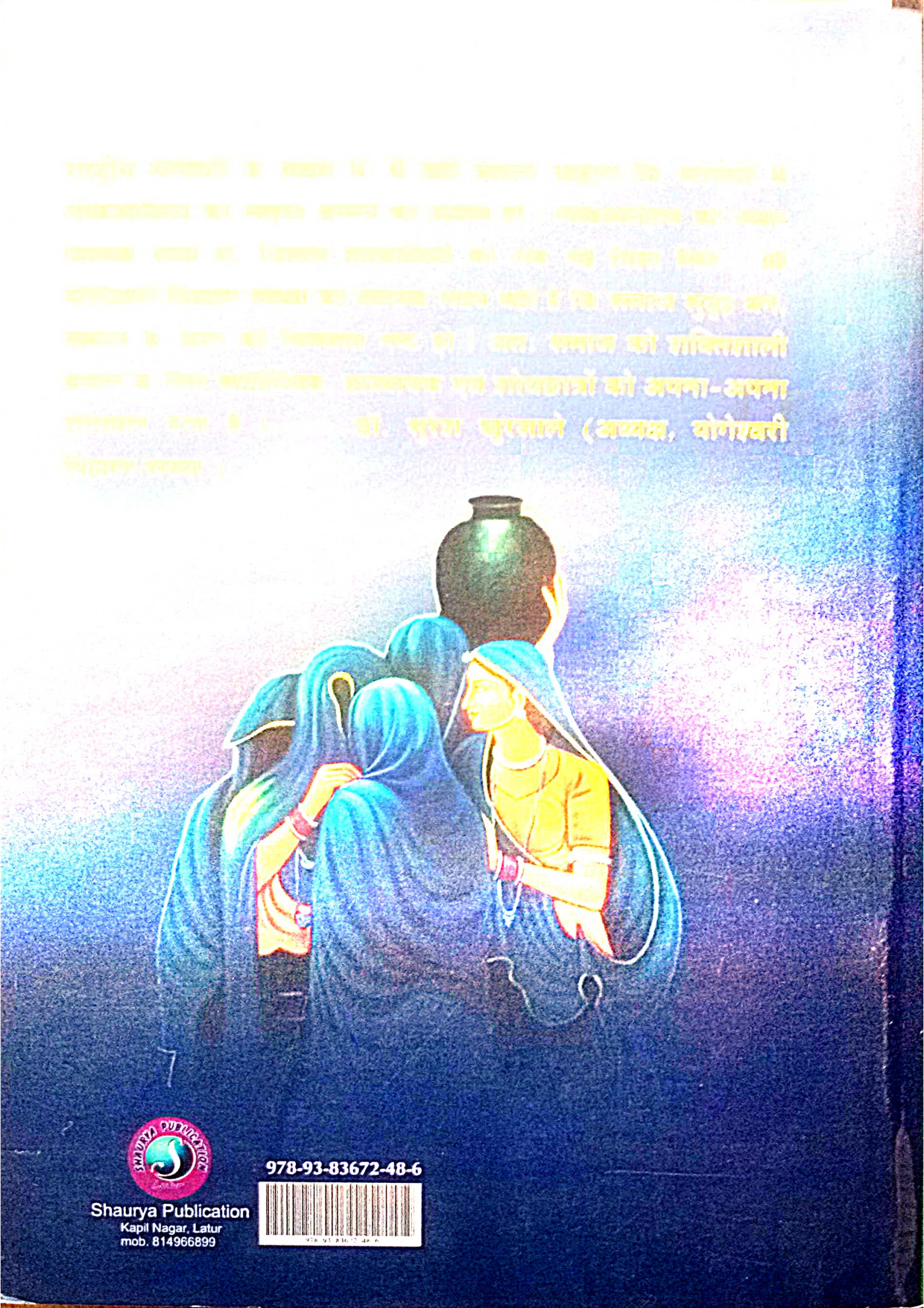

978-93-83672-48-6

Shaurya Publication
Kapil Nagar, Latur
mob. 8149668899